कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं अपने ईष्ट देव, बुद्धि विधाता, विध्नहर्ता भगवान गणेश जी व विद्या तथा संगीत की देवी माँ शारदे, हंसवाहिनी, ब्रह्मवाहिनी, वीणावादिनी, कलास्वामिनी, जगतारिणी, माँ सरस्वती को शत् शत् नमन करती हूँ, जिनके समुन्द्र से ज्ञान रूपी बूंद का एक अंश मात्र भर मुझ पर आ गिरा और इन्हीं के आशीर्वाद से मैं यह शोध कार्य लिखने जा रही हूँ।

इसके बाद में अपने नन्दकिशोर, चित्तचोर, माखनचोर, भगवान श्रीकृष्ण जी के चरण स्पर्श करना चाहती हूँ जिनकी कृपा से उनकी ही कुंज गलियों में मथुरा–वृन्दावन तथा मंदिरों में से मुझे शोध सम्बन्धी जानकारियाँ शीघ्रता से हासिल हुयी। साथ ही मैं अपने माता–पिता की जन्म जन्मान्तर ऋणी रहूँगी जिन्होंने मेरे प्रिय विषय संगीत में ना चाहते हुये भी विशेष परिस्थितियों में मुझे प्रोत्साहन दिया।

प्रस्तुत शोध कार्य ''ब्रजमण्ड़ल के लोकोत्सव, लोक कलायें एवं लोकसंगीत का अध्ययन'' के उद्देश्य से किया गया है। किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिये गुरूजनों के आशीर्वाद, मार्गदर्शन व परिवारीजनों के सहयोग की आवश्यकता होती है, जो कि कार्य की श्रेष्ठता व गुणवत्ता हेतु वर्धन का कार्य करती है।

अब मैं वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान की व संगीत विभागाध्यक्ष प्रो. ईना शास्त्री जी का सहृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे अपने संस्थान में प्रवेश देकर मुझे अनुग्रहित किया। इनके विषय में मैं जितना लिखू उतना ही कम है। मेरे परमस्नेही दोनों गुरूओं (निर्देशिका) प्रो. ईना शास्त्री व (सहनिर्देशिका) प्रो. किंशुक श्रीवास्तव जी को शत् शत् नमन करती हूँ जिनकी प्रेरणा व मार्गदर्शन के बिना मेरा यह शोध कार्य सफल नहीं हो सकता था। उन्होंने पग–पग पर मेरी समस्याओं का निराकरण किया। मैं सदा उनकी

आभारी रहूँगी क्योंकि उन्हीं के मार्गदर्शन से मेरी लेखनी अविराम चलती है। मेरे प्रति उनका व्यवहार सदा ही एक आदर्श गुरू का रहा।

इसके पश्चात् मैं वृन्दावन शोध संस्थान–वृन्दावन के ग्रंन्थागार और संग्राहलय प्रभारी डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' जी को अपने हृदय से विशेष धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे अपने पुस्तकालय से मेरे शोध संबंधी पुस्तकों से गहन अध्ययन करने में, और मेरे विषय के ब्रजलोक त्यौहारों व उनके गीतों के विषय में मेरी बहुत मदद की।

अब मैं उन गुणीजनों को विशेष धन्यवाद देना चाहती हूँ जिनसे मैंने मेरे शोध विषय पर सर्वेक्षण के दौरान साक्षात्कार के समय कुछ जानकारियाँ साँझा की थी। जिसमें वृन्दावन शोध संस्थान से जुड़े डॉ. राजेश कुमार शर्मा जी को, मैं धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे ब्रज की साँझी परम्परा के विषय की अतीत तथा वर्तमान से जुड़ी जानकारियाँ दी। इसके साथ ही मथुरा के शास्त्रीय संगीत व लोकसंगीत के साथ सैकड़ों वाद्य यन्त्रों पर निरन्तर शोध करने वाले व प्रसिद्ध उपाधियाँ पाने वाले सुप्रसिद्ध संगीताचार्य डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल जी को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे अपने ''डा. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल शोध संस्थान'' से मेरे शोध सम्बन्ध में पुस्तकें व ब्रजलोक संगीत एवं ब्रज के प्राचीन वाद्ययन्त्रों के विषय में जानकारी दी। इसके पश्चात् वृन्दावन के रहने वाले ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान व ब्रज संस्कृति के विशेषज्ञ श्री जगदीश प्रसाद शर्मा जी (गुरूजी) को हृदय से धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे ब्रज की होली के विषय पर विशेष जानकारी दी।

अब मैं ब्रज संस्कृति के विशेषज्ञ और उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष श्री मोहनस्वरूप भाटिया जी को बहुत–बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंनें मुझे ब्रज के बालकों के खेल व त्यौहारों (न्यौरता व झैंझी) की जानकारी दी। इसके पश्चात् मथुरा मोतीकुंज की 102 वर्षीय श्रीमती शीला देवी जी को भी बहुत–बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे मेरे विषय

सम्बन्धी रीति–रिवाज के लोकगीतों को गाकर, सुनाकर मुझे जानकारी दी। इन सभी गुणीजनों के पश्चात् मथुरा वृन्दावन के आस–पास के छोटे–छोटे ग्रामों में किये सर्वेक्षण के दौरान 80 वर्षीय श्रीमती रामश्री देवी व वहाँ की न्यौरता खेलने वाली कुंवारी कन्यायें और टेसू व झैंझी खेलने वाले छोटे बालक–बालिकाओं को विशेष धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे मेरे विषय सम्बन्धित ब्रज के बालक–बालिकाओं के त्यौहार टेसू–झैंझी न्यौरता आदि के गीतों को सुनाकर मुझे अधिक जानकारी दी।

वनस्थली विद्यापीठ के बनस्थली बुक सेन्टर (इम्पेक्ट) पर कार्यरत टंकणकर्ता (टाइपिस्ट) दिनेश कुमार जारोलिया का शब्दशः धन्यवाद ज्ञापित करके मैं उनकी कार्यकुशलता के महत्त्व को कम करना नहीं चाहती परन्तु मानव मन के कारण उनको मैं उनके प्रशंसनीय कार्य के लिए सादर धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने एकाग्रता, तत्परता एवं श्रमपूर्वक टंकण कार्य कर इस शोधकार्य को मूर्त रूप प्रदान किया है।

विषय के प्रस्तुतीकरण में यद्यपि बहुत सावधानी रखने का प्रयत्न किया गया है तथापि अज्ञानतावश अनेक त्रुटियाँ व दोष रह गये होंगे। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सहृदय व विद्वान महोदय ऐसी होने वाली त्रुटियों के लिये मुझे क्षमा करेंगे।

अंजली

शोधार्थी